

सामान्य विषयसारांश

न्याय दर्शन अर्थात् वादी दर्शन है - क्योंकि वाक्य जगत का
 => अर्थात् सत्ता स्वीकार करता है

=> वस्तुवादी दर्शन है क्योंकि ज्ञेय वस्तु का
 ज्ञाता से स्वतंत्र अस्तित्व है।

=> ज्ञान में वस्तुएं प्रकाशित होती हैं। इसलिए
 हम वस्तु का अस्तित्व स्वीकार करते हैं।
 (मानवीय मध्य सिद्धि)

=> ज्ञान वस्तु का निर्माण नहीं करता बल्कि
 ज्ञान वस्तु का प्रकाशक है। (ज्ञानाधीन वस्तुसत्ता)

=> आस्तिक दर्शन है क्योंकि यह वेदों की
 प्रामाणिकता स्वीकार करता है।

=> न्याय-वैशेषिक श्रमान-तंत्र कहलाते हैं। न्याय की
 ज्ञानमीमांसा शर्क तर्कशास्त्र प्रधान है जबकि वैशेषिक
 की तत्वमीमांसा (पदार्थ विचार) प्रधान है।

=> यह ईश्वरवादी दर्शन है। क्योंकि यह जगत के
 कर्ता, व्यवहृता, कर्म-फल नियंता, शब्द-अर्थ संबंध
 की स्थापना करने वाले के रूप में ईश्वर का अस्तित्व
 स्वीकार करता है।

=> कार्य-कारण सिद्धांत की दृष्टि से न्याय-वैशेषिक
 आरम्भवादी दर्शन है क्योंकि यह कारण से निमित्त
 कार्य का नवीन आरम्भ मानता है।

शारः संकलन

न्याय

प्रवर्तक - गौतम

मूलग्रंथ - न्याय सूत्र

कुलपत्रांश - 16, प्रमाण - 04

प्रमुख ग्रंथ -

न्याय भाष्य - वात्स्यायन

न्याय मंजरी - जयंत

तर्क भाषा - केशवमिश्र

तर्क संग्रह - अन्नमठ

भाष्य परिच्छेद - विश्वनाथ

वैशेषिक दर्शन

प्रवर्तक - कणाद

(अक्षपाद)

मूल ग्रंथ - वैशेषिक सूत्र

कुलपत्रांश - 07 (अभाव)

कुलप्रमाण - 02 (वाक्य में जोषा
 ग्रंथ)

(वाक्य में न्याय-वैशेषिक

दर्शन में सम्मिलित रूप में

चार-प्रमाण - शब्द सत्ता

पदार्थों की सत्ता स्वीकार

की गई)

प्रामाण्य - परतः प्रामाण्यवाद

रब्धाति - अन्यथा रब्धाति

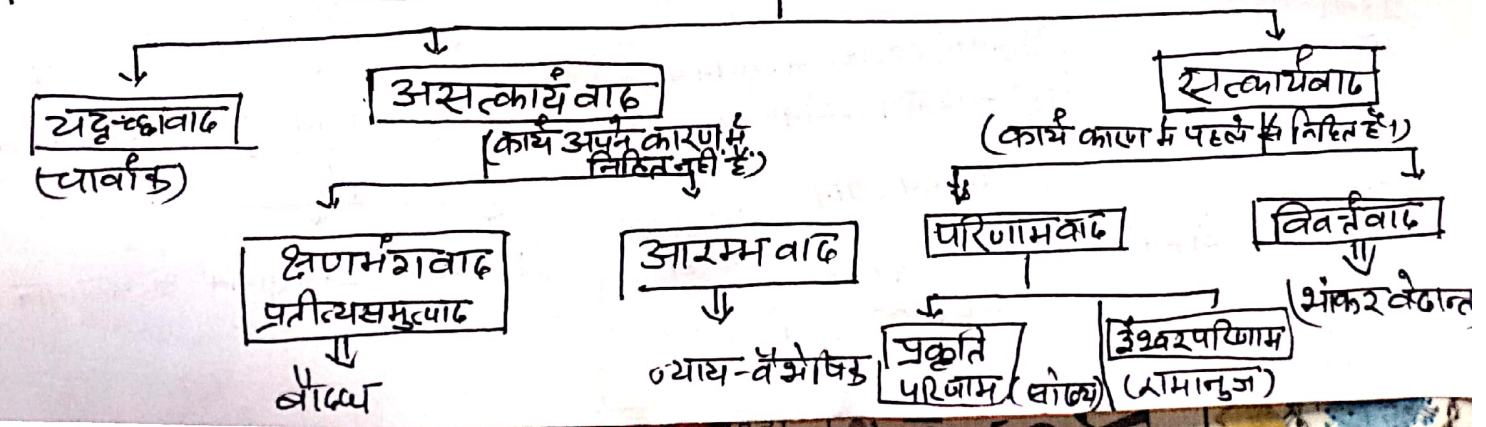
मुक्ति - टीतन्व रहित

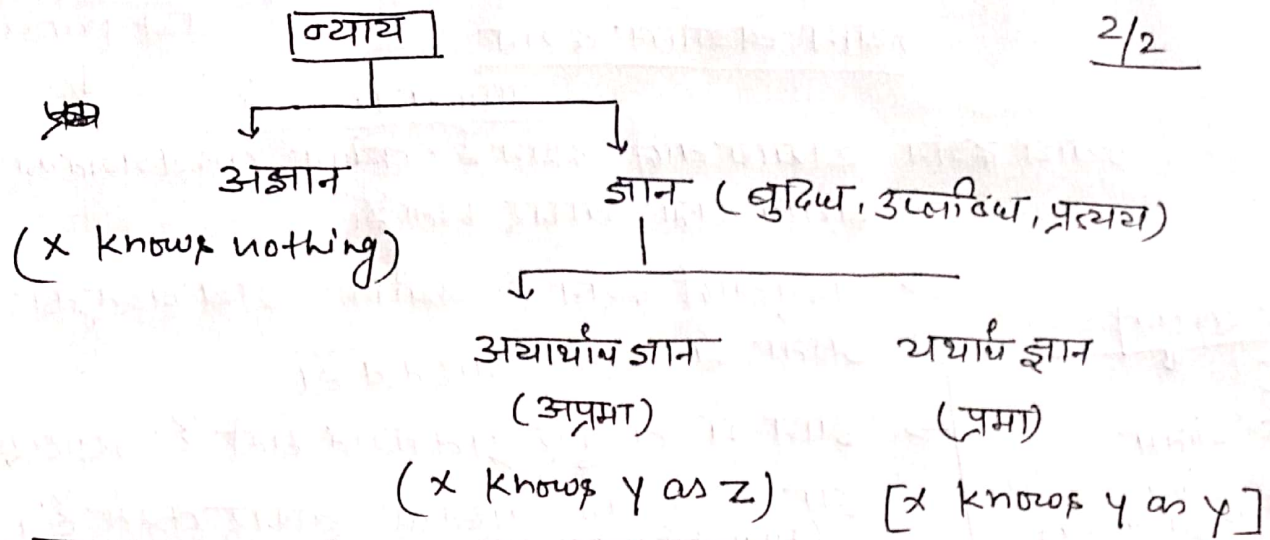
आनंदरहित

शुद्ध सत्ता आत्मा

के स्वरूप में अवात्म्य धरता)

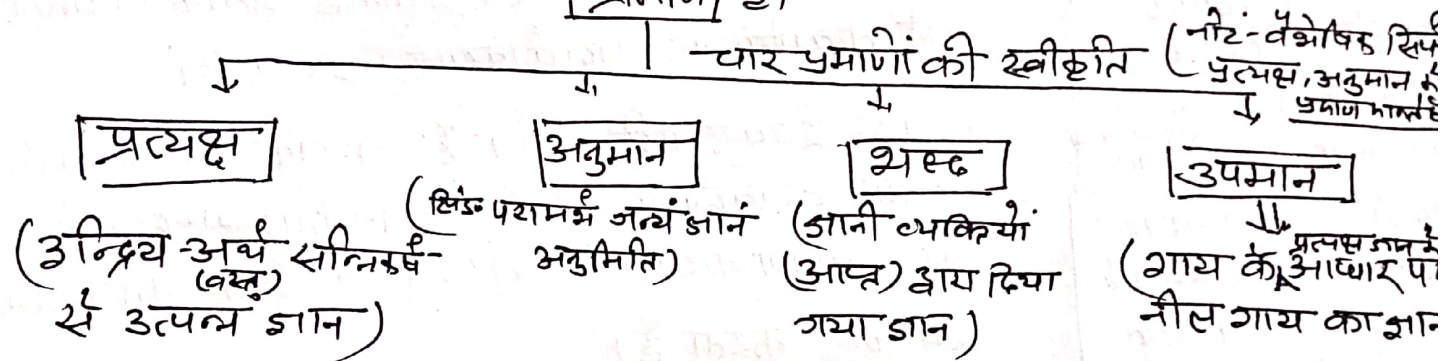
कार्य-कारण संबंध





- ⇒ प्रमा ⇒ (अधार्थ अनुभव) ⇒ (जो वस्तु जहाँ, जिसरूप में है उसे वही और उसी रूप में देखना) Right knowledge
- ⇒ प्रमाता ⇒ व्यक्ति, जिसे अधार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है। (Subject)
- ⇒ प्रमेय ⇒ ज्ञान की वस्तु (Object of knowledge)
- ⇒ प्रमाण ⇒ Means of Right knowledge.
अधार्थ ज्ञान की प्राप्ति का साधन.

प्रमाण हैं।



न्याय-वैशेषिक पदार्थ विचार - (कुल सात पदार्थ हैं।)

